





[illegible]

धर्मरत्न राज्याचार्य मुनि श्री महाबिहार

PH 223

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ सर्वसिद्धिदं नमो भगवते वासुदेवाय ॥
वसुदेवाय नमः ॥ दक्षिणहस्तं श्रीकांतं सूर्यमधुलं ॥ वामहस्तं श्रीकांतं चंद्रमधु
लं ॥ ॐ वं सै यं जौं सै ॥ कूं कूं कूं कूं कूं कूं ॥ कमलावलं नगं माधिष्ठानं ॥ ॐ
ॐ ॐ सर्ववृद्धं जकिनीयं वज्रवर्णं नीयं वज्रवेनाचनीयं कूं कूं कूं कूं कूं कूं
कूं कूं कूं कूं ॥ ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ स्वधुनाहं सर्वविघ्नान् हनन्ति ॥ ॐ वज्रं

[illegible][illegible]

[illegible]

यवजं नृणां प्रापयति सर्वविघ्नविनायकानां कामवाक्शिरुवका निकीलयद्वंष्ट्र
॥ ३ ॥ वज्रमज्जनवज्रकीलयमाकागयद्वंष्ट्र ॥ ४ ॥ निनिविघ्नरावयम् ॥ ॥
गगनकद्विभूतं नृणां सम्यग्मल्लुत्कटपनिर्वकाथनसिन्धुनिष्ठशुवनं
गत्वा गगनकद्विभूतं नृणां सम्यग्मल्लुत्कटपनिर्वकाथनसिन्धुनिष्ठशुवनं
सर्वसमयसत्त्वानां कलातीरुर्गविलोच्य ॥ ५ ॥ ३ ॥ गवणीवज्रवा नाहीप

वनसखा नाय पाय ध्वजमननैषा कमनप्रतिक्खा हा॥ ऊ० ह्रैवंहा॥ पृथ्वी
नाय॥ ॥ उं सर्वविघ्नकिनी यद्गुरुस्वाहा उं वज्रवधुनी यद्गुरुस्वाहा उं वज्र
वेनावनी यद्गुरुस्वाहा॥ उं जाकिनी यद्गुरुस्वाहा॥ उं लाभ'द्गुरुस्वाहा
॥ उं खलुनाह'द्गुरुस्वाहा॥ उं त्रिपिनी यद्गुरुस्वाहा॥ उं वं वज्रवानाही ह्रै
रुस्वाहा॥ उं हां यां यमिनी यद्गुरुस्वाहा॥ उं कौ मां माहनी यद्गुरुस्वा

हा॥ उं ऊं कौ सचेतनी यद्गुरुस्वाहा॥ उं ह्रै ह्रै संगासनी यद्गुरुस्वाहा॥
उं रुद्ररुद्रचक्रिक'द्गुरुस्वाहा॥ उं नन्दावलाय अ० ह्रै रुद्रस्वाहा॥ ५ ॥
उं उादियानधी ० अ० ह्रै रुद्रस्वाहा॥ उं पूरुगिनि यो अ० ह्रै रुद्रस्वाहा
॥ उं कामरूपी य अ० ह्रै रुद्रस्वाहा॥ उं श्री हगाय अ० ह्रै रुद्रस्वाहा॥ उं ध
मकाय अ० ह्रै रुद्रस्वाहा॥ उं सहा गकाय अ० ह्रै रुद्रस्वाहा॥ उं निम्मानि

कायम् १ हुं २ हृत् स्वाहा ॥ उं म ह्रस्व कायम् ४ हुं २ हृत् स्वाहा ॥ उं च पुन
क लाय स्वाहा ॥ उं ग क लाय स्वाहा ॥ उं का ला क लाय स्वाहा ॥ उं क ल क रे न
वाय स्वाहा ॥ उं हृत् स्वाहा ॥ उं ल क्षी व न कृ ता स नाय स्वाहा ॥ उं
धा ना भ का नाय स्वाहा ॥ उं कि लि कि लि ला त वाय स्वाहा ॥ पं वा वा हा न
पूजा ॥ सा र्घ वा लु ग ॥ का ल भ घ प ट ला न नी चू ल दि य दू ष प ट ला धि क

[illegible]

ग वसुं क वि नमः प्राम वि दू २ रुट् ॥ ॐ नमः ४ ता व नि ना व नि क्का ध का ना लि नि
दू २ रुट् ॥ ॐ नमः ४ स क्ता स नि मा व नि सु प रु द नि य ना ज य दू २ रुट् ॥ ॐ न मा व कि
नि व ज वा ना ही म द्वा या ग ध नि का म ^{नी} दू २ रुट् ॥ ॐ ज या वि ज थ ज म्हु नि रुः
म्हु नि मा रु नी थ दू २ रुट् ॥ ॥ ह रु पू ज ॥ वा न क न म्ध न क र्प व द रु क म
रु ध्वा ता ॥ ॐ वं व ज वा ना धे दू २ रुट् ॥ ॐ हा यो या मि नी थ दू २ रुट् ॥ ॐ डी मा

मा रु नी थ दू २ रुट् ॥ ॐ डं डी र्वा न नी थ दू २ रुट् ॥ ॐ दू दू स क्ता स नी थ दू २ रु
ट् ॥ ॐ रुट् रुट् च ध्रु व दू २ रुट् ॥ य वा वा हा व पू ज ॥ रु नि ॥ या मि न्या ख लू मा रु
नी रु ग व नी स वा नि नी रु र्वा दा स क्ता नि म्ध त थ प ना रु वि म ना या ख ध नी व ध्रु
का व ला ना रु रु म क र्वा ना मू र्वा नी सा नि ना जो व नी य मा धू म धू स ना धू ग न
ग र्वा द प र्वा ना धू र्वा ॥ ॐ रु द रु ग न रु नि वा न द रु ध नी रु रु प रु हा वि ज य नि व

येषां मुनू विनीष्टीया निनी गगनगुणग (६) समलंकृता मी म लयव्यामिसतर्ग
जननी जिनानां ॥ अस्मदमकुन अर्थयता ॥ गगा कन ॥ पापदगना ॥ कतका ॥
निगहनूमादिग मघम खिन निदिगदा घा ॥ अगिद नी मिदूवग ॥ पन न कन स
मन विद (६) वक र न जिना रुन सुग संरुगानि क गला निमनूमा दिगानि
वा (६) सम्यक् विगमि य मिख ॥ किन न लादिगुयं सर्वता वग न लया गिहि ॥ सर्व

तावदावाधिविरु विद (६) नू रुन मर्ग न कथा स्यवा ॥ ॥ ॥ ति आदिगाना ॥ ॥ ग
दनू मशी क नू म मदिग प का मित्र गुव क विहाना म्वावथग ॥ ॥ स्वता वदु द्वा सर्वध
मा ख ता वदु द्वा र ॥ ॥ गुन गाम धिनिष्ठिग ॥ ॥ गगा यनि धान वग म् आ का (६) गो नव
धु धमादिया ॥ ॥ गता र्य का न व वा य मधु लं धचा र गद य निर्वका न व अग्नि मधु लं
न कं न र कि ग ॥ गद य निर्वका न व व नू ग मधु लं धं टा कि म ॥ ॥ गगा य निर्वका

[illegible]

शुभं गत्वा वंका नल हग वनि वरु वाना ही नक वधु भ क वक्रा पि न रा
 दि नु जा द कि ल रु म न द न दि नू द र न र्ज नी वरु क र्ति का ॥ वाम रु म न न क व
 धु क पा रं शु क ख द म ध्रु जार्ण न क व रु न पि न र्ज द द्रु क ता त व क र व न धि ना न नी
 प द्म मू ज वि लु पि ता क ली का नू व क र रु ल म घ ना गि ना म नि य रू प वी प प
 के क पा ली ग रु न ग व नी सा र्ज न न गि न मा ला धा न वी का ला धा न नी न न्दा ॥

परं प्रमत्ती नृस्य गीतगवनी म्हावधन ॥ ॥ जाकिनी लामा खडुना हा नृयिनी
 कृष्ण म्हा मान काय गीतगवनी म्हावधन ॥ ॥ जाकिनी लामा खडुना हा नृयिनी
 ७३ ॥ दम नृखला म्हा आली गीतगवनी म्हावधन ॥ ॥ जाकिनी लामा खडुना हा नृयिनी
 वं यज्जवाना ही नृकवधु निमूखा मूल मूर्ख नृक वाम म्हा मंद कि लोपा
 नृप्रति मूर्ख निन गीतगवनी म्हावधन ॥ ॥ जाकिनी लामा खडुना हा नृयिनी

कया लख द्वा द्वितीया लामा नृमधु पाग रतीया कंठ मन्वधु साईन नृगिन मा
 ला धानवी आली गीतगवनी म्हावधन ॥ ॥ यामिनि भाद नि संगा सनी सवातिनी रुद्र
 वष्टिका नी लखु कृपा गीतगवनी मधु मवधु नृक मूखा वधु उजा प्रथम रुजा
 कर्हिक पाल द्वितीया लामा नृमधु पाग रतीया कंठ मन्वधु साईन नृगिन मा
 नामा लामा निनी नृकवधु निन गीतगवनी म्हावधन ॥ ॥ यामिनि भाद नि संगा सनी सवातिनी रुद्र

लिटासनं किंता ॥ गगनवद्विषु दिङ् नन्दावर्तमिमां सर्वरुगाहगवः
गीवजवानाहो मधुलमिमां ॥ ॥ गगनकवचाऽं सर्वविनवजयागिः
नीकायवा किं वज्रसहावा लकाहोऽं वज्रध्वजः सर्वधर्मावज्रध्वजः ॥
तदनूज्जन्त्या ॥ अरिधक ॥ ॥ यथाहिर्यासायदासापि न सर्वगथा
गता गथा हस्तापयिष्यामि शुद्धतु दिव्यता निर्वर्त्तुः सर्वगथा गता

अरिधक समन्विता ॥ अरिधकं महावज्रं धनुर्कनमस्कृत् यस्माकं
पूजनाथाय नमस्कृत्य चक्रनाह्वयः ॥ ॐ सर्ववज्रवृजामणिमहामरुता विष
कं ॥ मरुतः ॥ ॐ वज्रधाम धनी अरिधकं ॥ ॐ सर्ववज्री अरिधकं ॥ ॐ नत्त
वज्री अरिधकं ॥ ॐ धर्मवज्री अरिधकं ॥ ॐ कर्मवज्री अरिधकं ॥
ॐ अयाहिरिकसुमसि वज्रवज्रा रिधकः ॥ ॐ दत्त सर्ववज्रं वृद्धवज्रं

सिद्धिमावज ॥ उं वज्र धियति ह्यामरिषिं चामि निष्ठवज्रसयस्त्रि ॥ पृष्ठ ॥ उं
वज्रसत्त्वामरिषिं चामि वज्रनामा रिव कट ॥ श्री हं मूक वज्रया गिनी दवा ॥
नाम हं वस ॥ नाम ॥ ॥ स्व हृदिर्वं काननमिह निव्या आका (म) सा
कक्षगु स्तिग वज्रवा नाही समाग्रु लं यं अनादि सं सिद्धि आकृष्य ॥ ॥
पूर्ववत् अर्घादि ॥ पृष्य न्या स वा लाय सुनि ॥ पादांगुष्ठा कर्क विष्य नव

हृदयगर्भा संस्तिता विष्व नृपी मूका सर्वा सथाया दलन निनिता गां च
कविक्राकमोली स्व मूडामुडिगाही प्रवर्त गिनी संभूता वाम दृष्ट कर्क सत्वा
र्थ हकी मूदजन सुत्वदा गां नम ह्यन नूपा न ॥ ॥ मनुक र्घवा ॥ ॥ ततांगु
अचक नद्या वरुद किं वा वरुथ यमकी ॥ नारिवरु नर्वकान हृदय चक न
हं कान क वृचक न आका न ललाट चक न उं कान उवा वचक हं कान न

सुनायि चक्रे शुभ नन्दावरुणमन्त्री काम्मुखीपनिनेद्यावरुणामावरुणम
न्त्री अशिक्षि नहावयत् ॥ पुनकात्मस्वापवीणाकात्मस्वविद्याककण्ठुक्चक्रं
विहावयत् ॥ ॥ तगास्वद्विर्वकाननगिहृलित्वागगः स्वद्विहृदिहृत्कान
सूर्यमधुलं तद्रूपनिर्वकाननसिनी अकनिष्ठमुवनंगत्वा तत्कन्यादिर्वसि
द्विरुगवणी वक्रवा नाही समादलयं पद्यं हानस्वस्वमयस्वथानकत

श्रीतिरुगां विहावयत् ॥ ॥ ॥ अकर्वलद्विधमाभग ॥ ॥ पूर्ववग्न्यापाप
पश्चात्ताघमुनि ॥ उद्वागगा द्वीवदलमुखी सादिफदवीध्वनी सदासंगुवि
पातलागनिमुखी कालनन्दवृहानासाधनयनाय (ग) वनसिद्धिस्तुर्हि
यवदगी उवनययापलयत् सफार्थययद्वयो ॥ ॥ मन्त्रगर्पण ॥ ॥ गगा
मन्त्रजाप ॥ ॥ आ. पा. पू. प. वा. घ. मुनिगर्पण ॥ ॥ गगावसिहावना ॥

नगायका नल वायुमधुलं च लपटी का किरि धला दी। गद प निमं कान वल अग्रिम
लुलं न क वलुं शिकारं न हा कीर्ण गद प निमूद शय। गल (के) अका नल पद
हाजनं गग किग यावद कं डं गं ओं खं हूं लो मां पां गां वं काल प लिन रं प वी मृ
तप के प दी प नू प न निध्या अ प व न म धु ल प लि रं द्र लि गा ग्री ता पं विनी न
द ग दी जा पि स्त्रि त द ग न स म य ड व म रि म वा क न व धु मा ला कृ पा न द व

लुहूं कान जानि विग लि द पाद व न स ह स ह र्ग नी ति ह र्ग वि न य
॥ डं अः हूं ॥ व लि अ धि ष्ठा न ॥ ॥ पा पू वा ला र्घ सु म लु त य ॥ ॥ ग ग
व लि मा ला ॥ डं अं न्या न्या नू ग गा ॥ स र्व ध म्मा धि डं प न स्य ना नू ग गा ॥ स र्व ध
म्मा ॥ डं अ ल क्तान प वि ष्ठा ॥ स र्व ध म्मा ॥ डं द व य मा नं स म य प मा र्ग
ग द क वा च स्य न प्र मा नं च ग न स ल न र य न ता द य्या मा न व द द ग

गा॥ ॐ काला लिहाः ॥ ॐ वंहाः ॥ ॐ वानाही समय धूप साहा ॥ ॥
ॐ वक्रथा गिनी ॥ ॐ मं वलि गृह्णन् नमम सिद्धि प्रयेन्नु दू दू दू दू साहा
॥ ॐ खख खाहिर सर्वय कना कस रूग प गपि ग व उ मा अन प ख प ला
न ज क ग कि या द य ॥ ॐ मं वलि गृह्णन् नमम सर्व सिद्धि प्रयेन्नु दू दू दू दू साहा
॥ ॐ ज थ वि व प मा यि क म थ मम सर्वा कान ग या ग ग स ख व द य म हा य का

एवन्नु दू दू दू दू दू साहा ॥ ॥ अन नवान दय व लिंग कठा यथ ग ॥ ॥
पया दि पूजा वा उ न ला ग्धा य ग्धा वा द न सु ति न नु न र्थन ॥ ॥ पी ० दि पू
जा ॥ ॥ ॐ पी ० प पी ० य साहा ॥ ॐ क गाय क गाय साहा ॥ ॐ वृ ० प कृ द्या य
साहा ॥ ॐ म लाय का प म लाय साहा ॥ ॐ म ग ना प म ग नाय साहा ॥ पी ०
य पी ० क गाय क उ कृ द्या प कृ द म लाय का प म लाय क म ग ना पि वा गिनी ॥

मवी नवनी सर्वरक्तिपुलमा मय है ॥ मलाय गल्ली नगु (म) पय कथ विक स्य
कल्या जिग क ग ह नि (म) ग वा ग ना वा ग विमू क मू क थ विहा व हा वा य न म सु य
निनी ॥ म धु न स म कु ग र्थ व ॥ उं न प स्क (ध) दूं दूं दूं दूं ॥ उं व द ना स्क (ध)
दूं दूं दूं दूं ॥ उं स हा स्क (ध) दूं दूं दूं दूं ॥ उं स स्का न स्क (ध) दूं दूं दूं दूं ॥ म धु न स स
न ग न ॥ कु नि ॥ ए व स म स म स ऊ र ऊ स स थ धू ज्ञ स नि व स क ल ल व र्ण वि भा

[illegible]

यदि कमपन॥ ॥ उं या न गुहा सर्वधर्मा या न गुहा ह्रीं ह्रीं न स लेखनीय
 सवर्ण सनय सवर्ण एव निर्विकथन॥ ॥ पर्यादि पूजा ला ग्या मुनि
 गम कन॥ कमापन॥ मधुर्ल कलनी विमर्जन॥ ॥ ॐ निष्ठीवज्जवाना
 ही वज्जवानिनी दशसिमाफ॥ ॥

ॐ ह्रीं

नीचा

ॐ ह्रीं

नीचा

ॐ ह्रीं

नीचा

नीचा

ॐ ह्रीं

नीचा

ॐ ह्रीं

ॐ ह्रीं

नीचा

ॐ ह्रीं

नीचा

ॐ ह्रीं

नीचा

ॐ ह्रीं

नीचा

ॐ ह्रीं

नीचा

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

मिखाया

परी

रुक्मिणी

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

रुक्मिणी

मिखाया

वालिदा

मिखाया

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

वाकिर्न

नया

इयोरु

नया

मदनम

रुक्मिणी

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

ॐ

रुक्मिणी

मिखाया

वालिदा

मिखाया

मदनम

रुक्मिणी



वेला महिदया दितामहिदया



महिदयासुजानया हाविनमहिदया हानमहि



सम्यगिथा महिदया कथामहिदया काकसिद्धिना ननजया कथा कथनकार्यया दया लखया रयया



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



ह्रीं



पंचरुगाय



पनवकया



दणामसवाया



नामया



तन्निपनिनागया



कृष्टया



असुचिया



मिखानागया



पृष्टया



धनवध



सकताहना



मालकाया



नाकसया



जकया



जकनाजय



हनामिसाया



भावजदिकया



कायसयक



पणीनिय



पणीया



पणीसिकया



पणीनिसिकया



वानरुगया



कृष्टया

ॐ

सुनिकाया

ॐ

नादया

ॐ

विभवया

ॐ

नीजया

ॐ

ज कनिया

ॐ

रुदया

ॐ

सुनिकाया भाव अदिक सिकया असुविद्या

ॐ

ॐ

ॐ

१ हावगया

ॐ

कात्या

ॐ

कालीया

ॐ

विभवजकिनिया

ॐ

गलया

ॐ

विनया

ॐ

किमिया

ॐ

गणकिमिया

ॐ

गलमडया

ॐ

ॐ

ॐ

मोचाना कडाधिग

ॐ

चिकिधिकवल्या

ॐ

यायद्विवतया

ॐ

वहनया

ॐ

वहनया



रुग्नाज ३०

रुग्नाज १८



रुग्नाज ३०

रुग्नाज

रुग्नाज

रुग्नाज

रुग्नाज ३०



ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

की०

五

॥ मयपानकयुक्त ॥ ॐ ह्रीं श्रीं कूं ह्रम ह्रम नू विघ्ननासाय कूं ह्र ह्र स्वाहा ॥ ५
 पृथ्वी स्वर्ग कृष्ण नहा ॥ ॐ सायागिनी सिद्धि ला क अवगन रणी र्थ कूं ह्र ह्र स्वाहा ॥
 श्रीं श्रीं पाप प्रथं न्याग ॥ ॐ ह्र ह्र ह्र वृषिकार्थ नमः स्वाहा ॥ ॐ उग्र वरुण नमः स्वाहा
 ॥ ॐ वरुण वृषीय नमः स्वाहा ॥ ॐ वरुणार्थ नमः स्वाहा ॥ ॐ दिव्य नृपी नमः
 स्वाहा ॥ ॐ सिंह मनीष कूं ह्र ह्र स्वाहा ॥ पूजा चतुर्दश स्वान चय स्वा न
 नक वरुण वरुण कूं ह्र ह्र मनीक सिंह डी सिय कान ला धि म्वक सिन

[illegible]

जाय ग र्धन लं ॥ कि न न ॥ उं स्र क्ष पा ण धृ र्ग व क्क अ क स्र ग क वि न्द क
 । ख क्क न्या वा रु ना द वी ध्वा न प र्थ न म्मा सु ग ॥ म य पा न ॥ उं क्री णी क्क ह
 प था ग क ण वि म्म ना ग म य क्क र्द र्द खा हा ॥ श्र व णी त्व धु क्क ग त हा ॥ ख क्क
 य नी ख क्क ला क अ व ग न र्ग र्थ क नू क्क र्द र्द खा हा ॥ ध्वा न ॥ उं ख क्क य नी पी
 ग व धु र्ग ला न क म र्वा र्द स वा ह णी । व णु र्ग र्ज णी वि न्द पा र्ग च अ प न रु जा खी श्र
 क स्र ग क म ग लू ध र्ग ध्वा ण ॥ अ पा प र्थ न्या ग ॥ उं र्द र्द र्द अ व क्क य नी न म

स्वाहा॥ उं वृक्षवन्दनवायनमः स्वाहा॥ उं वासुकीनागनाजायनमः स्वाहा॥
उं सुभद्रपर्वगनाजायनमः स्वाहा॥ उं कदम्बवृक्षायनमः स्वाहा॥ उं रुक्मसा
नद्यायनमः स्वाहा॥ उं पुनिपयानवम्यानिथियसाहा॥ उं आदेखायसाहा॥ प्र
जाचगर्भक्रमपीतवक्रुखानश्रुलखानचपत्नी॥ उं कृक्रमचन्दनपीतज
ह्वापवीतपर्यनमः॥ थनदकलमलिकवृहिनकाशुनिकीलजावलि
स्वलासागमवजिपानचपत्नीयागिसिन्धुसिपकानलाधिवृक्षद्वी

नमाकसिन्धुवनिस्लाहासिन्धुकाकिधकाय॥ लासुति॥ उं वृक्षाय
नीवर्वपीताश्रुकावनीजसंरुवा॥ स्वायुधाविन्दुपाशचममरुहसवाहि
नी॥ गम्यन॥ वलिविन्धु॥ उं अकावनीजसंजागवर्ववकायनीयजकृवंहा
ममस्यपनिधानस्य॥ नैपुर्षिकनूदं वलिस्वस्वाहिस्वकायनीकृं
टस्वाहा॥ ३ ॥ अथमारुणीदवीपूजयग॥ जायगर्भधनहासीत्वकि
तेन॥ उं मरुपुरुकपालवीगत्यनिसूनतिष्ठिमनूदान्यावद्विदवीध्या

नपृष्यं नमास्तु नमः पाना ॥ उं डीं श्रीं कृद कना निनी विघ्नना ॥ भयं कृद कृद
ला ॥ धूप कस्तु नि कय्यना ॥ उं क नो दायणी नू डला कं अवन नरणी धी क नू कृद कृद
स्वाहा ॥ ध्यान ॥ उं माह ग्वनी खग व धु हा वृव वादिनी वपु उजा मू न उजा खी
विन्दू पाग कृ पप न उजा खी विद वल पि गूल ध्याया न ॥ अकल पाया दि प्र
व्यन्या ग ॥ उं माह ग्वनी यनमः स्वाहा ॥ उं दं दं कृदायनी यनमः स्वाहा ॥ उं न
ड वलु ह न वा यनमः स्वाहा ॥ उं ग क क ना ग ना जाय नमः स्वाहा ॥ उं मल य

पर्वग ना जाय नमः स्वाहा ॥ उं उं दं म न वृ काय नमः स्वाहा ॥ उं सू म ग न्ध न य
नमः स्वाहा ॥ उं द्वि गी चार्थी द ग्म्यां नि धि यनमः स्वाहा ॥ उं सा माय नमः स्वाहा
॥ पूजा चमक प्यून ग्री ख गु स्व ग व कृ खान् जि न खान् च उ त स्वी ॥ उं क य्य न
शी ख गु वन्दन स्व ग य ह्वा प दी ग पृष्य निमः ॥ द कृ क्ष ना व ग वृ दि शाय हाम त
उ गु नि द द्वां सिं क सि भान् म धि वा क स म धि वृ क ना न वृ क मा क सि न ना
वि क न नि स ला डी सि सा भा कि ध कृ य ॥ सा ग्म सु नि ॥ उं माह सूर्या नि न

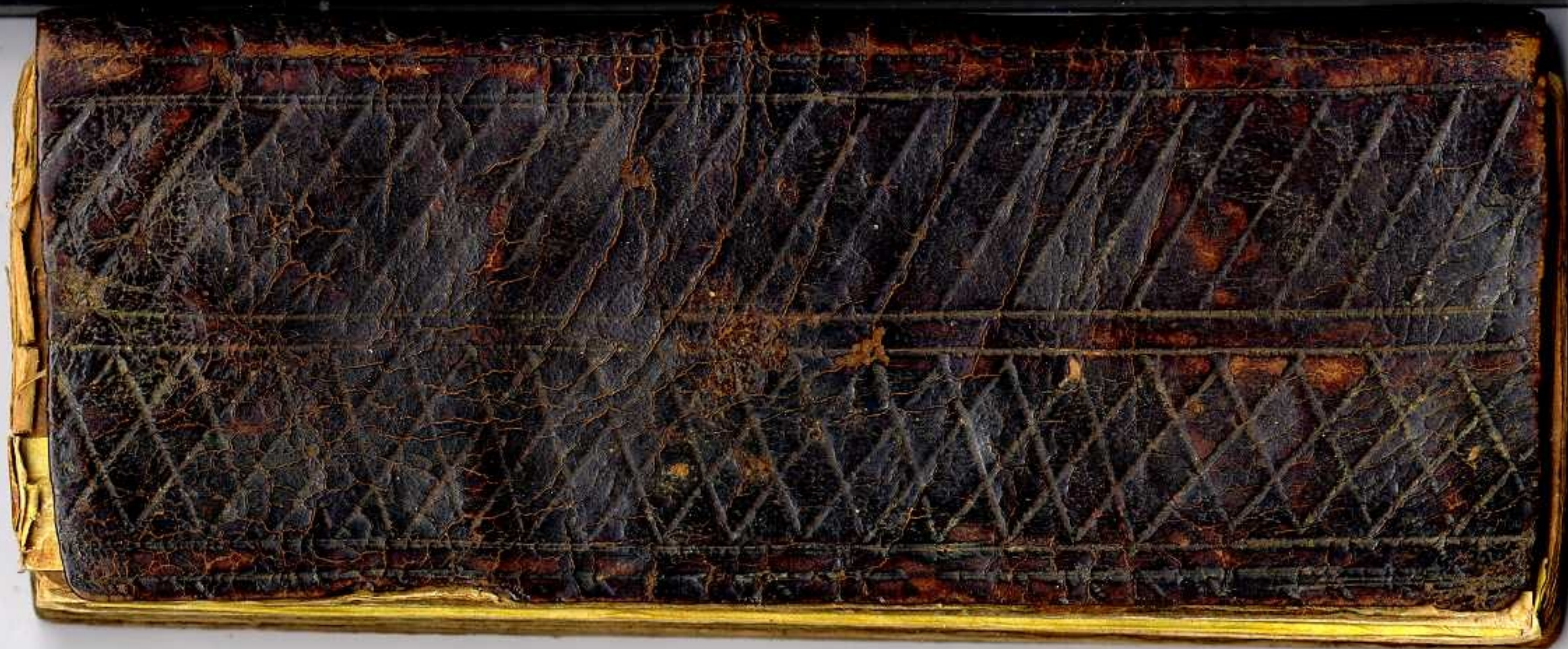
पुष्पाककातवीजसंरवा। सायधा विन्दुपाणये नमस्कृत्य ववाहिनी॥ नम्यं न
॥ वतिदिय॥ ॐ आः कं र्दककावीजसंजागडरुनमाह ग्वनी ॥ ग्वगा ॥ विपि सर्वध
तानां गभकिं नूस्वसिखाहा ॥ न्तिमाह ग्वविपूजा ॥ ॥ अथ कोमानीपूजा ॥ जाप ग
रूपन पूल कितन ॥ ॐ विन्दु कं गकि ह र्म वज स्यति जयमानिनी कामा र्था वाहय
देवी ध्यान पर्य नमास्तुत ॥ मया यान ॥ ॐ ऊं यौ हं ह ॥ अरु ह हा स विपुना गाय हं
रुत्वा हा ॥ धूप कर्पूर रुट ॥ ॐ च कोमानी उमा सा कं अवतन र गी र्थं क नू हं रुट

सा हा ॥ ध्यान ॥ ॐ कोमानी व क व धु र्वा ममून वाहिनी व पु र्जु जा निन ग मू ल उ ग
र्था विन्दु पाण च अपन रुजा र्था ग कि क र्ति कं ध्या याग ॥ आ पा पर्य न्या गा ॥ ॐ
रु रुट कोमानी ये नमः स्वा हा ॥ ॐ न ल व न्द र्शन वा य ने मः स्वा हा ॥ ॐ ग रु पा न ना
ग ना जा य नमः स्वा हा ॥ ॐ मा ह न्द प र्व ना यु नमः स्वा हा ॥ ॐ क र्ने ज वृ का य नमः
स्वा हा ॥ ॐ नू ड ग न्ध न आ य नमः स्वा हा ॥ ॐ ह गी या न का द ध्या ति पि थ नमः स्वा
हा ॥ ॐ अं ग ना य स्वा हा ॥ पू जा च ग न क च न न क व रु रु ल र्था ॥ ॐ न क च

[illegible][illegible]

वेष्टवः यनमः स्वाहा ॥ ॐ वीनवधुरे नवायनमः स्वाहा ॥ ॐ कलिकनागनाज
यनमः स्वाहा ॥ ॐ मरुतनागनाजायनमः स्वाहा ॥ ॐ एकटिवृकायन
मः स्वाहा ॥ ॐ चनवगीनदीयनमः स्वाहा ॥ ॐ चपुष्पाद्विदधनमः स्वाहा ॥
ॐ वृद्धाय स्वाहा ॥ पूजा वग कस्तु निष्कामवस्तु सा सर्वस्वार्थदात्री ॥ ॐ कस्तु
विचन्दन स्वामयस्तु पवी गयस्पर्धनमः ॥ धनदकल स्वार्थ विदालवृद्धिफ
मयुत सिंवाह सिंखल वलिसला जा पान साखन गिठुगु निपचा

मृगयाक्रान् पूनमधिभा कसित जिगदान निसलाड ॥ सिंहा धा किञ्च
न ॥ ला कृति ॥ ॐ वेष्टवः स्वा मनेमस्तु टला नवी जसक्तु वा स्वायूध वि
न्द्याय नमः कनू जसनी ॥ गयर्धन ॥ वलिवि ॥ ॐ नमस्तु वस्तुवा ग
नूजसनी प्रमियस्तु नमस्तु सर्वग पुनाना गयश्वी ध्वस्तु २ कस्तु स्वाहा ॥
ॐ गिद्वेष्ट विपूजा ॥ ॥ अथवाही पूजयता जाप गलधन लाडान किन
ना ॥ ॐ या नमस्तु गधनाया वस्तु कार्ये व विद्वत् काता स्यावा दयदवी ध्या



ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥
 ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं नमः स्वाहा ॥

[illegible]

य न मः स्वाहा ॥ ॐ ह म व गि न दी ना जा य न दी य न मः स्वाहा ॥ ॐ ह म व गि न मा वा
स्या नि धी य न मः स्वाहा ॥ ॐ सिं हा स नी य न मः स्वाहा ॥ पू जा थ ग र्क क म द व दा
नू सिं क द्र हा ल खान रू प क ण न स्त्री ॥ ॐ र्क क म द व दा नू न क च न द न न क य ह
प्र वी ण पृ थ्वी न मः ॥ द क भ र्क क म द व द्रु हि क ल ग व ति स ना पा न चि ति म भि न न
धि सि त्वा सु मा कि रू स क म्मा रू व रू पि ना क सि मा नि स ता ऽ सि सा धा कि क्क व
॥ सा मु ति ॥ ॐ ब ह्म त् की व जे ग म न स कान वी ज रू रू वा मू धा वि न्द्र पा य च न

म ह्म सिं हा दि नी ॥ वि न्द्र ग र्थ न ॥ व ति वि य ॥ ॐ ब्ही ग म न व त्रि द वी ह्म व धु य ॥
द व ति ॥ ॐ क रू व त्वा दि रू स रू व रू ता दि ग म कि रू नू स कि ॐ आ ॥ ॐ ह्म त्वा हा ॥ ॐ ति म
हा त् की पू जा ॥ ॥ ग य रू न व पू ज य न ॥ जा प ग र्थ थ न ला व न ह्म य न कि
न ॥ ॐ क रू न पा या दि पृ थ्वी ग ॥ ॐ अ ह्म रू न वा य न मः स्वाहा ॥ ॐ व ह्म
न वा य न मः स्वाहा ॥ ॐ क रू न वा य न मः स्वाहा ॥ ॐ उ नू क रू न वा य न मः
हा ॥ ॐ क पा ल रू न वा य न मः स्वाहा ॥ ॐ नू ल रू न वा य न मः स्वाहा ॥ ॐ स ह्म न

हे नवाय नमः स्वाहा ॥ ॐ ह्रीं वमहे नवाय नमः स्वाहा ॥ ॐ श्रीं हूं नवाय
नमः स्वाहा ॥ ॐ नी नवधुय नमः स्वाहा ॥ ॐ पीं वम नमः स्वाहा ॥ ॐ सिद्धिः
दाय नमः स्वाहा ॥ ॐ य गा सनीय नमः स्वाहा ॥ पूजा धन अगु सिखान हा क
अहना नि ॥ ॐ हू हू वन्दन यज्ञा पवी ग पूष्य नमः ॥ द कि न्म ला उ ग प कान
ग्य नद ॥ वलि सला ग रु गु नि का यला पाल पान कटा थ रु दि मा स स्वा ग सि र
चा व रु क रु मि मा मा क मि त् तर्ज सु क म्या त नि स ला णा ति सा धा कि क य म

जा ला म्या रु नि ॥ ॐ नृ त्या नन्द वन वी न नि क र्त्तव नि ना म र्थ पि गा नू र्त्त वा
मार्त्त हे न वं प व मा म्य ह ॥ ॐ अ सि गा न नू ल धे व त् व रु थ क्ता ठ हे न व ॥ ॐ न म रु
हे न वं चै व क था ल ही य र्त्त ग म्भा ॥ स हा न व व व चा रु क र्त्त न वा र्त्त न म रु ग ॥
वि न्द्र वि या ॥ द लि ॥ ॐ अ कान मू ख स र्व ध म्मा नि हा न्मा म हा य क ली ॥ ॐ द व लि
गु क र्त्त स हा र्त्त न वा य दू र्त्त स्वा हा ॥ ॐ नि रु न व पू का ॥ ॥ अ प ग र्त्त न पू ज
॥ जा प ग र्त्त धन पू न धू प गु गु नि ॥ ॐ र ग व न्द्र वि मा न क था दि ॥ अ पा प ॥ ॐ

गंगनाथनमः स्वाहा ॥ उं गंगाधिपयनमः स्वाहा ॥ उं गंगाधनायनमः स्वाहा ॥ उं ग
 नपतिपूजिगाय स्वाहा ॥ उं सिद्धिदाय स्वाहा ॥ उं प्रसादाय स्वाहा ॥ उं नमो भगवते
 स्वाहा ॥ उं विष्णवाजाय स्वाहा ॥ उं गंगनाथनमः स्वाहा ॥ पूजा ॥ वरप्रसाददाता स्व
 गायत्र्यपनागिगच्छी ॥ उं (ध्वजचन्द्रनीलश्यामवती नमः ॥ दक्षप्रपूजि
 तका ॥ वलिसूक्तप्रशुनिहाजा यानमः जिधं सिनीसि ॥ नमः धिलद्वेष
 कप्रपासागमाकमितसूक्तप्रकायदक्षसकस्य ॥ पूजा ॥ उं नमः धीवि

ध्रुवनाथविष्णुधर्ममहावीरं विष्णुपायसिद्धय ॥ विष्णुनाथाय दवाय ग
 गंगनाथनमः ॥ विन्दुवलि ॥ अकानमः स्वाहा ॥ ॐ ॥ गणेशमानवपूज
 ॥ आप्गर्हधनप्रथनागधूपतिगङ्गासा ॥ उं गंगवन्दनसर्वविद्यामार्ज्यादि ॥ आया
 प्रथम्याग ॥ उं कमानायनः स्वाहा ॥ उं स्कंदायनमः स्वाहा ॥ उं निधिवोदनाय
 नमः स्वाहा ॥ उं गङ्गाधनायनमः स्वाहा ॥ उं हमवप्रसायनमः स्वाहा ॥ वग
 दमनकवकुलीप्रथयस्वी ॥ उं नकचन्दनतक्त ॥ नकयश्यापवीनप्रथम

म॥ दक्षिणमस्तु तद्वाममभि सिवाकोलसी कद्रवत्सि वलिसत्ता ग शुभुति
कीलजा यान्धके दृष्टि कनग मा कसिननं लावा लाहृति ॥ ॐ नमः श्रीरुमानाय
॥ वीनविजमसोदय्यग कि हर्कं गुवमूर्खी सर्वसिद्धदानार्त्तमानं पदमा ममर्ह ॥ वि
न्दुविवा वलि ॥ ॐ अकानमूर्खयादि ॥ ॐ निरुमानपूजा ॥ अथमहाकालपूजा
॥ आपगर्धनलावत धूपधूनु ॥ आ पापूर्य्याग ॥ ॐ वक्रमहाकालाय नमः
स्वाहा ॥ ॐ महाकालीय नमः स्वाहा ॥ ॐ अहं दी स्वाहा ॥ पूजा वगः अगु स्वाहा

श्रुताजी गस्त्री ॥ ॐ कृष्णवन्दननमः कृष्णयज्ञाय वीणं धूपं नमः ॥ दक्षिण
वगः दृष्टिमाग मधिपा चसमधि सिधूकोलसि शुभुति नूधिन मात मा कसील
नवलाव अयदक समर्क ॥ पूजा ला मुति ॥ ॐ नमः श्रीमहाकालाय ॥ कृमापा
नर्यस्यापि विकटा कृषिगूलधृक ॥ कृमादकं स्वा नूट माहाकार्त्तनमा म्यह
॥ विन्दु वलि ॥ अकालमूर्खयादि ॥ ॐ निमहाकालपूजा ॥ अथकृष्णपात
पूजा ॥ आपगर्धनदृष्टि धूपकधूपन ॥ ॐ रगवन्मर्द्धविद्यानाजीष्वापा

पूर्यं न्याग ॥ उं कृणु वा लाय स्वाहा ॥ ३ ॥ पूजा व मयी खलु तं सुमि स्वान ॥ उं
न चन्दनस्य गय म्पदी तयूर्यं नमः ॥ दक्षिण वलिसूला पानधं मधिप
नमधि सिखरु सिद्धि गाय स्वक सिनमा स्वी कुरु लदक संकल्प ॥ पूला सु
नि ॥ उं नमः ॥ श्री कृणु पा नाय ॥ उं स्वस्मान्नाधिकानं वस्वस्व नूपा स्ववी जस
स्वस्वकाष्ठ वित्तना के दिव्या नक विहमिका ॥ दक्षिण कुरु कृणु पा न कृणु वव
तुर्दक्ष ॥ यक्ष सदा कृणु पा न व कृणु पा लनमा म्यहं ॥ विन्दु विय वलि ॥ उं अकाल

मुखखादि ॥ श्रीनि कृणु पा ल पूजा ॥ ॥ अथ सिंघिनि पूजा ॥ जापन रूथन
कंसर्प कृणु पा ल मर्म ॥ अथ पा पृथग्मास ॥ उं सिंघिनी यनमः स्वाहा ॥ ३ ॥ पू
जा व मयी खलु जी लुखा धनिखा ॥ उं न चन्दनस्य गय म्पदी तयूर्यं नमः ॥ द
क्षिण वलिसूला पानधं मधिप नमधि सिखरु सिद्धि गाय स्वक सिनमा स्वी कुरु लदक संकल्प ॥ पूला सु
नि ॥ उं नमः ॥ श्री सिंघिनि दक्षिण
वर्षा स्वक म्पदी वनना ज म्पदी सिंघिनी दक्षिण नमा म्यहं ॥ तयूर्यं नमः ॥ वलि ॥ उं

अकानामुख्यादि॥ इति सिद्धिनिदेवा पूजा॥ ॥ अथ याघिनी पूजा॥ जाप
गर्हपनं सुपसतं धूपकं कम॥ आ वा प्र॥ ॐ याघिनी नमः स्वाहा॥ पूजा विगन्त
चन्दन कलसी॥ ॐ नमः चन्दन कलसी यक्षाय वीर्यपूर्ण नमः॥ दक्षिण मूर्ति वसिष्ठ
सा साध पा न पात कि म धि र्य व य कान सि मा अ वा सि मा च दू दि अ क न मा क न
न उ ला नि सु ला ण सि सा ध कि दा हा न य॥ पूजा ला मु नि॥ ॐ नमः श्री याघिनी य
वीर क व र्ति क मूखा य र्व वा व न्म हा वी ना या घि नी च न मा म्य ह॥ न र्व न॥ व

सि॥ अकानामुख्यादि॥ इति याघिनी पूजा॥ ॥ अथ नाग पूजा॥ जाप गर्हपनं
रुक्मिणी धूप सिद्धि सुक गत हा॥ व न अ र्ध न धा॥ आ वा प्र पू ष्य न्या न॥ ॐ अननक ना ग
ना जा य न मः स्वा हा॥ ॐ वा सु की ना ग ना जा य न मः स्वा हा॥ ॐ क क क ना ग ना जा य न
मः स्वा हा॥ ॐ क क क ना ग ना जा य न मः स्वा हा॥ ॐ य न ना ग ना जा य न मः स्वा हा॥ ॐ
म ह ष म ना ग ना जा य न मः स्वा हा॥ ॐ र्ग ख पा त ना ग ना जा य न मः स्वा हा॥ ॐ क सि क
ना ग ना जा य न मः स्वा हा॥ ॐ व न्म य न मः स्वा हा॥ पूजा पू वा कि द ल दू द क न

हा मन्त्रः स्तोत्रं निः। उंजला विपति नागनाजस्रस्रदिदि विदिदि स्तोत्राः सत्त्वार्थयसदा
 निः। उंजला विपति नागनाजस्रस्रदिदि विदिदि स्तोत्राः सत्त्वार्थयसदा
 ॥ धनं पूजा धनं दाया ॥ मर्जना धनं वसि विपति वसि माता दक्षपतय ॥ ॥ धनं च गहा
 यक ॥ उंजला विपति नागनाजस्रस्रदिदि विदिदि स्तोत्राः सत्त्वार्थयसदा
 ॥ धनं पूजा धनं दाया ॥ मर्जना धनं वसि विपति वसि माता दक्षपतय ॥ ॥ धनं च गहा
 यक ॥ उंजला विपति नागनाजस्रस्रदिदि विदिदि स्तोत्राः सत्त्वार्थयसदा
 ॥ धनं पूजा धनं दाया ॥ मर्जना धनं वसि विपति वसि माता दक्षपतय ॥ ॥ धनं च गहा
 यक ॥ उंजला विपति नागनाजस्रस्रदिदि विदिदि स्तोत्राः सत्त्वार्थयसदा

उमादधीपुसंतवा ॥३॥ जयावकिजया श्रवज्जिताअपनाजिता ॥ रुद्रकालीमहा
कालीरुद्रकालीगुहागिनी ॥७॥ ॐ ह्रिवधुर्दष्टीधानीलम्बकीप्रिदागवनी ॥ कम्य
जिनीदीपिनीवापीरुन्याग्रमैवस्मिन्गुहागिनी ॥८॥ धामरूपामहावृषादंष्टरूपाकपासि
नी ॥ कपासमासमालिन्याखर्वांगायमरुद्धिका ॥ ९॥ स्वमहस्मापनसहस्मावज
हस्माधनसुधापकृष्ठाकिनीमहागुरुसुर्वर्कमार्थसाधक ॥ १०॥ यागमधुर्लमहा
नागैवजग्वनीप्रयुक्तधा ॥ तथागणमहाकायनिनजरेनयानशुद्धिका ॥ ११॥ ॐ

आवृत्तगानयधुमनूतमभनयः निवसन्निधय ॥ १० ॥ कृतासुपूर्वसुगन्धमा
त्याधूपवसिपुष्यवातेदीर्घवसि विधिंवरुक्काः ८८ कुरुकुजनुपिवरुचयद
वेकर्मसकलैयर्गुसाहा ॥ ११ ॥ दानपगत्यादि ॥ ॥ धनवसिस्तज्ञानकृशर
तस्यंयत्तपदानपूजाअनूकमार्थ ॥ पुष्ययाग ॥ साध्वंस्तुतिगर्भवा ॥ धन
धनदायास्वमपूजा वादानपूजागर्भनविनु ॥ मातृकसंकल्पयाय ॥ मनुस
धिसकास्तुति ॥ ॐ नमः ॥ धीयागमनाय ॥ आगमनमहावीर्यवजस ॥ ॥ सुसंदि

गी। नानाहानसमूहगं वक्रनाथाय नमः ॥ ॥ ॐ नमः ॥ धीवशुकार्ये ॥ मान
वचर्तुसकासंखनरुटकविन्दुकी। कामरूपीमहादेवी उग्रव ॥ धुनमस्तुत ॥
ॐ नमः ॥ धीप्रसमायिकायो वक्रनाथनीमहादेवी नोदायनी स्वगसन्निशा। कोर्म
नीनकवधुम्भीरेव्वीचनमस्तुत ॥ वात्राहाधानरूपीव ॥ द्वायली ॥ नानसं
निशा। नमोसीकारिकादेवी महास्तुती नमस्तुत ॥ गगयनीवधुकीवेव म
हाकाननमाविही। रुनवतीधर्मीनोदंगगनार्थनमस्तुत ॥ ॥ ॐ नमः ॥ धी

[illegible]

रुन लं सि धि य धु न म स्त ॥ १ ॥ खें खें खें ख प्र ह स्त उ म नू रि मि पि मा र पु मा ना स ए ग हा
नूं नूं नूं नूं मा ला रु न ल वि रु बि र्ग दी र्व जि क्रा क ना तूं द वी पी ड्य च सु रा व नि व व प
सि धि व धु न म स्त ॥ ८ ॥ अ ष्ट क उ रि ता द वी अ ष्ट क नि वा सि नी अ ष्ट रे व व र्त य
का अ ष्ट बा पि का न म शु भ ॥ नि व धु का स व स मा क था ॥ १० श्री शृ नू य ना भ य न
॥ ३ ॥ आ न न्दं कि य नि व धि ग म नू रा ह ग लान नू प न वि धा वि वि धा न नू र्पा अ ष्ट
ग सा ध न न य न प न म ग म्हा र्त्ता ट व र्त स क ल सि धि क र्त्त न मा मि ॥ ॥ ७ न म ४

धी नारयणाय॥ सर्वस्वात्मकं नत्वा सर्वरूपं संलिङ्गता॥ सर्वसिद्धियुक्ता
व सर्वरूपं न मांभूही॥ न कस्य स मरुद व पाणि न मधुन इव लज्जान व
लिधापन मनु यायन॥ न कस्य सूर्या र्घ्यं॥ पृथ्व्यजन॥ जलसंधन॥ अहिबक॥
आवमन॥ गिलक॥ आत्मन का॥ पृथ्या विष्टान॥ मधुतथित॥ उं वज्रहम हूं॥ उं व
जादक हूं॥ वजा॥ ममय हूं॥ शुभ्रिष्ठान॥ उं स्वधुधन स्वाहा॥ पीनवा समुत्त॥ उं
हमभ्यादि॥ खान दाहात्वाय॥ पुन नमस्तन॥ उं अ॥ हूं॥ श्रीमद्वज्रयादि॥

धनं लिहस्व॥ धन॥ उं वज्रकाननसंजागं सूर्यविमं स्वयत्ननी॥ वामस्तकत्स
जागं शुद्धपद्मविरावयन॥ कनकया॥ ॥ सूर्यं हूं॥ अ॥ स्मृं॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥ अ॥
कादियुधवग॥ अ॥ गन्या॥ ग॥ हूं॥ मूख॥ हूं॥ मूखि॥ हूं॥ कर्तुं॥ हूं॥ वक्रदया॥ अ॥
॥ सर्वाणि॥ स्मृं॥ क॥ हूं॥ वाहू॥ हूं॥ हूं॥ हूं॥ नाहो॥ स॥ सर्वाणि॥ उं
वज्रविरुहं॥ उं वज्रवाकं हूं॥ उं वज्रकायं हूं॥ हूं॥ नाहो॥ गनका॥ उं हूं॥ हूं॥
यादि॥ मनु॥ धन॥ उं वज्रकवचं हूं॥ कवचमखानासकवच॥ उं वज्रपाकान

॥ गणः समाहिता मन्त्रा निशान्क निर्विसंकरा । कृदयचन्द्र विमलं ह्रं कामा
हवमीधनी ॥ ॐ वक्रयुषाहा ॥ कालामूर्धादधिग ॥ ॐ आकर्वणि ह्रं ॥ आकाश
लमूर्धा ॥ ॐ वक्राङ्गनादि ॥ धूप ॥ स्नान ॥ जल ॥ गवा ॥ मधू ॥ सर्कन ॥ दधिआमिय ॥ मन्त्र
स्नानादियथावत् ॥ कम्बन पुष्प गन्धनादि दधिसकम्ब मन्त्र पुष्प नल्ल पक गन्ध
गवाजन ॥ ॥ गणमभ्युपसन ॥ ॐ सर्वभूतहितेभ्यो नमः ॥ ॐ हवमीधनी ॥

[illegible]

। हस्तालिनीस्तर्गुरुवीणादिर्गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ यद्गङ्गाहवम ॥
जा पूर्ववत् ॥ ॥ उरुवङ्गाहवम ॥ आदिनस्तर्गुरुगङ्गाहवम ॥ निन्दन
नूतनिरुसो मन्मथस्यकाहवम ॥ गङ्गाहवम ॥ मन्मथस्यकाहवम ॥
ॐ गङ्गाहवम ॥ यद्गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥
ॐ गङ्गाहवम ॥ यद्गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥
ॐ गङ्गाहवम ॥ यद्गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥

माल्यमन्त्रजप्यादि शिवाय शिवयाननाम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥
॥ यद्गङ्गाहवम ॥ यद्गङ्गाहवम ॥ यद्गङ्गाहवम ॥ यद्गङ्गाहवम ॥
ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥
ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥
ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥
ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥
ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥ ॐ गङ्गाहवम ॥

॥ उं व (वे) नमः स्वाहा ॥ उ रु न ॥ उं का क (वे) नमः स्वाहा ॥ अ (मे) ॥ उं घा नी ध
नमः स्वाहा ॥ न म स्य ॥ उं क भु य नमः स्वाहा ॥ वा य य ॥ उं उ भ य नमः स्वाहा
॥ श्री ग न ॥ ॥ धू प दा प न य श दि य ध म्मा ग्ग ॥ रु नि ॥ स्व रु द व ना ॥
प द्मा प नि पा र्ण न (वे) न ॥ दी प व र्ति प क्क दा प थ न ॥ ग र्त्त प न थ न ॥ ॥ ग द नू
ग ला क पा र्ण पू ज य ग ॥ स्ना न क्क हा ल ग ॥ स्व रु द व ना ध्वा न ॥ धू पे वि रु सि न्ध
न ज्ज म स्ना न न व य ॥ स्व रु द व ना पू ष्प न्या ग ॥ व नि ॥ य व म्मा ॥ स्व रु द व

ता स्वाहा ॥ ग द नू म्भ ज्ज न पा य कं ग ॥ पं चा प द्मा न पू ज ॥ रु नि ॥ ॥ श्री गि र्ज
न वि धि ॥ ॥ ध्व र्त्त लि ङा प नि पा ति न द व पू ज या य ॥ य म्मे वि रु म्मा य म्मा य म्मा
ग्री र्त्त स्ना थ स्य धू पा ॥ अ गु नि उ गु नि क रु नि क र्त्त न ज्ज ता मा म्मा ॥ उं आ च म नं प
गी रु स्वाहा ॥ ॥ पू ष्प न्या ग ॥ उं नमः सिद्धि ना ठ ध्व ना य द्दं द द्द स्वाहा
उं न चि न द्दं उं द्दं स्वाहा ॥ उं श्री म हा का ला य द्दं द्दं द्द स्वाहा ॥ उं व (मे) नमः
स्वाहा ॥ उं वि पू ष्प स्वाहा ॥ उं गं क ल य स्वाहा ॥ उं का म ध्व ना य स्वाहा ॥ उं सिद्धि

न स्वाहा ॥ ॐ नागिन्य स्वाहा ॥ ॐ वायिन स्वाहा ॥ ॐ हयग्रीवाय स्वाहा ॥ ॐ इन्द्रा
य स्वाहा ॥ ॐ यमादिपक्षदशमगवः कवर्ण ॥ ॐ वनदाय नमः ॥ ॐ
सुसूनाय नमः ॥ ॐ किन्नराय नमः ॥ ॐ अरुमाय नमः ॥ ॐ अग्निगार्हपत्ये नवा
य नमः ॥ ॐ ह्रीं षण्णरे नवाय नमः ॥ ॐ यद्वरे नवाय नमः ॥ ॐ ह्रीं हनरे नवा
य नमः ॥ ॐ नूतरे नवाय नमः ॥ ॐ उन्मरे नवाय नमः ॥ ॐ कपालरे न
वाय नमः ॥ ॐ काठरे नवाय नमः ॥ ॥ पूर्ववत् पूजा ॥ वलितस्य यककग

॥ ॐ हस्तनूत स्वादि ॥ ॐ इन्द्रादिकजीलादि ॥ ॥ स्वयं स्वादि ॥
वलि ॥ विज्ञानं स्वादि विन्दुः तद्यत्न ॥ ॥ पनपनूत विप्रिधं क्रिया ॥ मूलपीत
या विधि ॥ ॥ अभातपर्वक हं कोषागपुत्रमुरुमी ॥ सटिना मात्मा रावके ॥
हं नूतमूपमदह गानिना प्रविष्टगं विनगं वपुः वा रुमी ॥ पूर्ववत् पूजा दधाय वि
धुवका रुम निर्व ॥ कपालमात्मा महुटं वज्रमात्मा विरु विर्ग ॥ मृगुगुण्दामदहाय
वपुः वा रुम हं हं ॥ ॥ या प्रवर्ग निवसने वा ना द्वादह हं विर्ग ॥ एकपादी सदादि

मंदकिरीपिगधुवक वासनकदनिगी। उद्धमगुमुखी। धनं शुभं वनोडरिष
दी॥ वज्रचण्डसमापनीदयाधननिपीठिगी। जिनचर्ममधुवर्जकिनीरुलधामि
नी॥ कपालखर्वांगधनं वज्रविद्राघवर्कगीपागभरेणकनयार्णभनूमधुधामि
दी॥ कर्हिकापनधुववर्जकादगारिगथा। सवाकामावतयाशुभकपादाविशव
थग॥ गजवक्रावनवक्रागावक्राविहवक्रासुथेववाखानाननायथमादिनि
याउत्कवक्रा॥ हगीयाधुवनमूखावर्थावायसीमूखा। पी० सैकनधर्मासा

नानानपधनामही॥ इति नृकपादविश्वनृप॥ ॥ अथान्यस्यवक्रामिवानाही
साधनारुमीउत्परिद्रमथा। गवआसरावविशवथग॥ दादगभकनिर्हंददी
द्वर्कादसनिर्हीवधुकाजवाशर्यागिमूर्खयद्रुजकथा। सवातंकाभस्यै
सवयथइसुकिगी। कपालमालामूकतकावविद्रनिगीधुहीवक्रचण्डसमा
पनी। उयायाधनपीठिगी। वागभगुवधनीकधुधुनिगकारिगी। कपालखर्वांगधना
मंदगभकवर्गपनी। नकपक्षमधुकीसर्वकामप्रदायिगी। अथवादादगभुजावजामनी

दियदहजाडिनिनीववनाहमूर्त्तीदिवगजायहिषग॥८॥ श्रीवज्रवामादीष्टः॥ वं
हंरुद्राह॥ ॥ गिबहुजवज्रवामाह॥ ॥ अथान्यसंयवकामिबधागिनीविधि
कमीपकेपयलिखात्यमर्कहिकाकगनाकर्त॥ गजमधुपानाज्ञानकविपात्राल
ह॥ छिमुखावहुजासोम्याजिनपाभूककणीका॥ कयात्मातामद्वयदिगम्बनधना
पनासिन्हाद्यपयकाभूजादहहविता॥ मृगगदामधनाकातनात्याप्रधाद्यप
र्दकाकमानासर्वदृष्टमानानिदवर्तामकनीसहनितापकेमूडेनर्लहर्ताकपालवर्दा

गधर्तापागर्भकृणकनापना॥ मृगकर्हिधनासर्वसिद्धिपदाविका॥ उदतहानसमयक
यवाकिरुगावजाप्रवासेपानिनीदवीवामावर्गदिविन्यसगमाहनीसश्चनितिहो
सनीवधिकासुभगिनशमूककगपुत्रकवकावहुर्जुजा॥ दिग्वासाद्यत्यदासुभ
लाविरुविताः॥ अकासकृदमूककाकनूभननसोत्तुका॥ अथययागसहवाहन
सत्तातिगः॥ पनी॥ वानाकावजसत्तुयामिन्यावेनावनमादिनीपर्मनर्हवर्तसवान
निन्याहूककथा॥ सीपासिगावजसूर्यास्तुवधिकापनमप्यथा॥ वजसत्तुतिगः॥ पू

[illegible][illegible]

मीषद्विद्रुपयनिर्मगुणिमन्त्रादिधनतः सिद्धयः विरुद्धजागनाजालमालम
नर्दानादिसिद्धाविनर्मसो विधापुक् ॥ वज्रगिगानयत्सत्वा मवदजधनालमंशुध
वायकागयजपूरावयगर्मनहसुखं मरुतजधनानाजवकवर्माधिपहवत ॥ कुरुमा
नूगसकागंदिद्यगजकलखर्गमहामुद्रासमापनधर्मधगुत्तरावक ॥ वामदोकिधमा
निगद्यधकजकलण हं ॥ अस्तिपुक् कलवर्गकपाताङ्गपागघाउत्यनीमनूकग
भा ॥ कुरुमान्नीर्त्तवनकहनिर्गसिगाईर्वाधर्मधगुमहसुखसुखधगुसमाचकः ॥ पू

वर्धोवामवर्त्तन्यसत् ॥ परंगवीनांशुजनिद्रासहस्युतां ॥ द्रुसर्ववानादीषेनावर्त्तना
मिनीवृत्तपमनूकसुधनासिधमाहिनीसहस्युत ॥ हनकंस्वेतिनीविवकसु
यत्तुसत्तासनीकथा ॥ पनमाशुगुकासहस्युतव्यासगणकत्वा सिद्धयमरुनोत्स
यी ॥ सिर्त्तनकापीगनीर्त्तनकसिर्त्तनीर्त्तवातनकहनिर्त्तहनिर्गधमसुनी ॥ एवविव
वयं द्रुपुनकवकाचसुठजादिव्यामुद्रिजुगाधेवकपातकर्हिकापना ॥ वीनाकपात
सर्वागः ॥ एवचिद्रुपयमागिनः ॥ घण्टासहसमायकावज ॥ सुसकनापनां निन्या

[illegible][illegible]

८४। लीनां विलीनः कस्मिन् स्थितः सर्वशून्यः नादयः किं कर्तुं न विनवयन
नरुवन किं विदुः निमलः सर्वविषयः भादिया गप ह निवर्तन सहजः सर्वसह
जः स्वमिति किं विनिवृत्तः न ज्ञातिगः ४७८ किं कः ४१ कः स्वगः निजपदागः स्वकी
यः स्वनागः कया वधुः ली कनली लया वधुः ली न कः मा कन नू पवृत्त वा य स ह वान्
विषयः नू पा कः स्याः ४१ कन कि न गः ४१ न स्य ली ला कित्ता गया धरु विरु ह कि निवि हिये
दः मा कः पद किं विनिवृत्तः ४१ साकः ४१ समनू गः ४१ समर्हि गिता या वगः कया स या वधुः स्य

किं विनिवृत्तः न ज्ञातिगः ४७८ किं कः ४१ कः स्वगः निजपदागः स्वकी
यः स्वनागः कया वधुः ली कनली लया वधुः ली न कः मा कन नू पवृत्त वा य स ह वान्
विषयः नू पा कः स्याः ४१ कन कि न गः ४१ न स्य ली ला कित्ता गया धरु विरु ह कि निवि हिये
दः मा कः पद किं विनिवृत्तः ४१ साकः ४१ समनू गः ४१ समर्हि गिता या वगः कया स या वधुः स्य
किं विनिवृत्तः न ज्ञातिगः ४७८ किं कः ४१ कः स्वगः निजपदागः स्वकी
यः स्वनागः कया वधुः ली कनली लया वधुः ली न कः मा कन नू पवृत्त वा य स ह वान्
विषयः नू पा कः स्याः ४१ कन कि न गः ४१ न स्य ली ला कित्ता गया धरु विरु ह कि निवि हिये
दः मा कः पद किं विनिवृत्तः ४१ साकः ४१ समनू गः ४१ समर्हि गिता या वगः कया स या वधुः स्य

ममहासूयुदि धातुविद्युत् सुकटागस्य स्वाधन तथा। कथं अश्रु (न क धा
पुष्येयथा गगासक विद्युत् अ कानर्त्त। ॥ उं काना वद्वगद्य द्वाव गोत्र प्ररुन
पूना गगुं रित्ता विनिर्जगि। ननमा कृत्ति कावूरे। व हृत्स्य ववन उं कानया॥ ॥ वज्रस्व
नव विन्दु अक्षन्दू धविनावनः। नवानल धृक्पाका वा कान धामिगात् कथं अ काना मायवि
द्विष्टास्य भेद द्वास्व कंज गग। यर्वय के पजाना गि स्वयं। जगता वल॥ ॥ उ वृजि अ वृजि
वृजि नः। रवनि पवधु लाप माययन। समर्क वृद्ध स्य ववन॥ ॥ नमा वज्रया नि

न्ये॥ ॥ उर्व कृत्त काय वृत्त स्य स्य व वृत्त वृत्त वि राय वृत्त सुं वीजा कर्त्त मनी विमूख स्य क
हावया धि विमूख न ला म न सहा स्य वका ग क क म ल स्य स्य मान न्य ग द स्य स्य मधु
स्य य व मान न्य ग द स्य स्य धि मा ग मूख स्य र जा न न्य ग द स्य स्य क नि ला म न र्त्त ग द व स्य स्य
म र्त्त वी ला का ह न वृत्त धि व स्य पित म नि प र गि मृदू अ न न्या दि ना रि म धि दू द या द
धि ॥ ॥ धि मा ग द धि मा र्त्त ग ग क स्य क ला चि गा व वि ग न न्य ग द ग दि र्त्त मा द न नि
न न व दी र्त्त का ला स्य स्य व य ग ॥ ॥ उ वि व गान वा द ग क ला स्य स्य व ॥ व नी व वा धि नि र्त्त

[illegible]

मालित्वा पूजयत् गङ्गां वा पूज्य किं नृपां ह गुरुवति मक्ष अनाय गङ्गा धर्माद्या
मक्ष मूलमनुदीप्ये धर्मजयत् ॥ गङ्गा नृ उं सर्ववृद्धा कि नीय द्रुं रुं द्वाहा ॥ रुं
न नाना धर्म मवाम ॥ उं वज्र वधु नीय द्रुं रुं द्वाहा ॥ द किं ॥ उं वज्र वे नाच
नीय द्रुं रुं द्वाहा ॥ रुं ति अरु य ग ॥ उं गं डिया न वज्र पृथ अर्धं द्वाहा ॥ उं
पृथु गिनी का म वज्र पृथ अर्धं द्वाहा ॥ धं कामा क वज्र पृथ अर्धं द्वाहा ॥
द्वाहा ॥ उं गी रुं वज्र पृथ अर्धं द्वाहा ॥ उं धर्म काय वज्र पृथ अर्धं द्वाहा ॥

